जनवरी २०२५

अक्रम एक्सप्रेस

अक्रम एक्सप्रेस
मैगज़ीन अब
वीडियो में भी
उपलब्ध...
सिर्फ गुजराती में

कहीं हम मूर्खता तो नहीं कर रहे?!

संपादकीय

बाल मित्रों,

अर्जुन को परीक्षा में कई सवालों के जवाब नहीं आते थे। जब टीचर का ध्यान नहीं था तब उसने अपने फ्रेन्ड के पेपर में से जवाब कॉपी कर लिए और अच्छे मार्क्स ले आया। लेकिन इसे बुद्धिमानी कहेंगे या मूर्खता? शुरुआत में अप्रामाणिकता बुद्धिमानी लग सकती है। लेकिन इससे बड़ी मूर्खता और कोई नहीं है। जब अगली परीक्षा में उसे जवाब नहीं आएँगे तब वह क्या करेगा? टीचर उसे पकड़ लेंगे तब? सजा मिलेगी तब?

इसलिए, अप्रामाणिकता का शोर्ट कट अपनाएँगे तो आगे चलकर हमें दुःख ही मिलेगा। चलो, ज्ञानी की दृष्टि से प्रामाणिकता को समझें।

आयुष ने कौन सा रास्ता अपनाया? बीरबल ने चोर को कैसे पकड़ा? विमल मंत्री की नीति, लीली की प्रामाणिकता और साथ ही जानते हैं कि आलू-चिली की कहानी में आगे क्या हुआ।

- डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

February, 2026
Year 13, Issue : 11
Conti. Issue No.: 155
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोनः ९३२८६६११६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2026, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

ज्ञानी कहते हैं...

बिना पूछे लेना चोरी कहलाता है। कई लड़के ऐसे होते हैं कि अगर उनकी मम्मी घर से सब्जी लेने भेजती है तो वे ले आते हैं लेकिन बचे हुए पैसों का हिसाब ही नहीं देते। बाद में वे उन पैसों को खाने-पीने और दूसरी चीज़ों में खर्च कर देते हैं। यह भी चोरी कहलाती है। अगर चोरी करते हुए पकड़े गए तो क्या होगा? संस्कारी लोग ऐसे गलत काम नहीं करते। अगर कोई हमारी चीज़ उठा ले जाए तो हमें अच्छा नहीं लगता है। फिर हम किसी की चीज़ कैसे ले सकते हैं? ऐसे संस्कार आ जाए तो बहुत ऊँची मानवता कहा जाएगा।

व्यापार में कम तोल कर देते हैं, मिलावट करके देते हैं, एक चीज़ के बदले दूसरी चीज़ दे देते हैं यह सब अप्रामाणिकता कहलाती

है। जो गलत काम करके पैसे कमाता है उसे पता नहीं होता कि अगले जन्म में उसका क्या होगा। दो पैर में से चार पैर में जाना पड़ेगा। डिस्ऑनेस्टी इज़ द बेस्ट फुलिशनेस। (अप्रामाणिकता सबसे बड़ी मूर्खता है।)

अगर हम नीति, प्रामाणिकता बनाए रखेंगे तो धीरे-धीरे ऐसा पुण्य बंधेगा कि मोक्षमार्ग की लिंक मिल जाती है। प्रामाणिक रहने से भीतर शांति और संतोष रहता है। अगर हम झूठ नहीं बोलेंगे तो लोगों को हम पर विश्वास रहता है कि यह हमेशा सच बोलता है, कभी झूठ नहीं बोलता। इंसान की कीमत रहती है।

हमें निश्चय करना चाहिए कि हम किसी को दुःख नहीं देंगे, चोरी नहीं करेंगे, झूठ नहीं बोलेंगे। और अगर ऐसा हो जाए तो प्रतिक्रमण करना चाहिए।

चॉकोबज़ चॉकलेट

आयुष ने हर्ष को फ्रिज में कुछ रखते हुए देखा। हर्ष के वहाँ से जाते ही तुरंत आयुष ने फ्रिज खोला। अरे, ये तो वही चॉकलेट है जो कुछ दिनों पहले उसने हरिकाका की दुकान पर देखी थी। ब्लू कलर का चमकता हुआ रेपर, उसके ऊपर ग्रीन और ऑरेन्ज कलर के स्टार्स थे। रेपर पर बड़े अक्षरों में लिखा था - चॉकोबज़। आयुष ने चॉकलेट को हाथ में लेकर सूँघा। उसे बढ़िया चॉकलेटी खुशबू आई।

आयुष ने हरिकाका की दुकान पर यह चॉकलेट देखी थी और वह उसे बहुत पसंद आई थी। आज वही चॉकलेट उसके अपने घर में, उसके अपने फ्रिज में थी। लेकिन देखा जाए तो यह घर या फ्रिज उसका कहाँ था? आनंदालय में रहने वाले आयुष को तो 'अपना घर' यानी क्या यह पता ही नहीं था। आज उसके मित्र हर्ष से एक अंकल-आन्टी मिलने आए थे। वे हर्ष के लिए 'चॉकोबज़ चॉकलेट' लेकर आए थे।

आयुष चॉकलेट का रेपर फाड़ने ही वाला था कि तभी एक आवाज आई और वह चौंक गया। 'आयुष, यह हर्ष की चॉकलेट है बेटा!'

पीछे मुड़कर देखा तो रोज़ी मैडम हाथ बाँधे खड़ी थीं।

'लेकिन मैडम मैं तो सिर्फ एक बाइट चखने वाला था' आयुष ने धीरे से कहा।

'क्या तुमने हर्ष से पूछा?' मैडम ने सवाल किया।

'नहीं', आयुष ने कहा।

'अगर तुमसे बिना पूछे कोई तुम्हारी चीज़ लेगा तो क्या तुम्हें अच्छा लगेगा?' मैडम ने पूछा। लेकिन आयुष ने कोई जवाब नहीं दिया।

'अगर कोई बिना पूछे तुम्हारी चीज़ लेता है तो तुम्हें पसंद नहीं आता, तो क्या तुम्हें बिना पूछे किसी की चीज़ लेनी चाहिए?' यह कहकर रोज़ी मैडम वहाँ से चली गईं। आयुष ने चॉकलेट वापस फ्रिज में रख दी।

चॉकलेट तो फ्रिज में रख दी। लेकिन चॉकलेट खाने का विचार नहीं। उस शाम आयुष ने टी.वी. पर चॉकोबज़ चॉकलेट का एड देखा और उसका मन किया कि टी.वी. स्क्रीन के अंदर हाथ डालकर चॉकलेट उठा ले और अपने मुँह में डाल दे।

लेकिन यह संभव नहीं था। वह उदास बैठा था। तभी रोज़ी मैडम

टी.वी. रूम में आईं। उन्होंने टी.वी. बंद कर दिया और सबसे कहा, 'चलो, टी.वी. टाइम खतम हो गया। सब जाकर अपना होमवर्क कर लो।' और आयुष से कहा, 'बेटा, होमवर्क करने बैठने से पहले बाजार से बीस रुपये के नींबू लेकर आओगे?'

आयुष भले ही दस साल का था पर सभी बच्चों में सबसे बड़ा था। इसलिए कभी-कभी जब छोटी-बड़ी खरीदारी करनी होती तो मैडम आयुष को ही काम सौंपती और आयुष खुशी-खुशी और जिम्मेदारी से काम करता।

सब्जी की दुकान पास ही थी। वह सब्जी की दुकान की ओर चल पड़ा लेकिन पता नहीं कैसे उसके कदम हरिकाका की दुकान की ओर बढ़ गए। उसने हिम्मत

करके वहाँ से चॉकलेट उठाई और कीमत पढ़ी। पूरे पचास रुपये। कीमत देखकर वह निराश हो गया। इतने सारे पैसे कहाँ से लाएगा?

चॉकलेट वापस रखकर वह नींबू खरीदने गया। उसने पचास का नोट दिया। सब्जी वाली बहन ने बीस रुपये के नींबू दिए और तीस रुपये वापस दिए।

घर आकर आयुष रोज़ी मैडम को बचे हुए पैसे लौटाने ही वाला था कि तभी रोज़ी मैडम का फोन बजा। उन्होंने आयुष से कहा, 'बेटा, बाकी के पैसे गल्ले में रख दो।' आयुष ने गल्ले में पैसे रखने के लिए हाथ बढ़ाया। तभी अचानक उसे चॉकोबज़ चॉकलेट याद आई और उसके हाथ काँपने लगे। उसने आसपास देखा और दस रुपये का नोट गल्ले में रखा और बीस रुपये वापस अपनी जेब में रख लिए। वह वापस मुड़ा तो देखा कि रोज़ी मैडम सामने खड़ी थीं। आयुष बहुत घबरा गया। उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा। 'क्या मैडम ने देख लिया होगा?' उसकी साँस फूलने लगी।

तभी मैडम ने हँसते हुए पूछा, 'पैसे रख दिए बेटा?'

आयुष ने राहत की साँस

ली और बिना कुछ कहे बस सिर हिलाकर 'हाँ' कहा और चुपचाप वहाँ से चला गया।

दो-तीन सप्ताह बीत गए। आयुष इंतजार कर रहा था कि मैडम उसे फिर से बाजार सामान खरीदने कब भेजेंगी। इसलिए जब मैडम ने उसे बाजार से टूथपेस्ट और साबुन खरीदने भेजा तो वह इतना खुश हुआ कि मैडम को भी उसकी खुशी देखकर हैरानी हुई।

सामान जगह पर रखकर उसने मैडम से कहा, 'बाकी के पैसे गल्ले में रख दिए हैं।'

मैडम ने कड़क लहजे में कहा, 'बिना पूछे? दोबारा मत रखना। बचे हुए पैसे मेरे हाथ में ही देना।' आयुष ने धीरे से कहा, 'ओके मैडम, गलती हो गई।'

लेकिन हकिकत में आयुष को अपनी गलती का एहसास नहीं हुआ था। उसे तो सिर्फ जेब में रखे पचास रुपये और हरिकाका की दुकान में चॉकोबज़ चॉकलेट ही दिखाई दे रही थी।

रविवार की दोपहर थी। रोज़ी मैडम आराम कर रही थीं। आयुष चुपचाप बाहर निकलकर हरिकाका की दुकान पर पहुँच गया। काँच की अलमारी से चॉकलेट निकालकर उसने हरिकाका के सामने रखी

और जेब से पचास रुपये निकालकर उनके हाथ में रखे।

हरिकाका ने चॉकलेट की कीमत पढ़कर कहा, 'बेटा, यह चॉकलेट तो साठ रुपये की है।'

आयुष ने फटाक से चॉकलेट हाथ में ली और कीमत देखी। कीमत बढ़ गई थी। आयुष बहुत निराश हो गया।

आयुष दुकान से बाहर निकलकर एक बेन्च पर मुँह लटकाए बैठा था। तभी एक आन्टी वहाँ आईं और उन्होंने अपना बैग आयुष के पास रखा। उन्होनें आयुष से कहा, 'बेटा, मैं दुकान से कुछ लेना भूल गई। जरा मेरे बैग का ध्यान रखना' यह कहकर वे दुकान में चली गईं।

आयुष की नज़र आन्टी के बैग पर गई। सामान के बीच से उसे झाँकती हुई चमकदार चॉकोबज़ चॉकलेट दिखाई दी। आयुष ने आँखें फाड़कर देखा। हाँ, ये वही चॉकलेट है! आन्टी दुकान में थीं, आसपास कोई नहीं था। आयुष के

पास सचमुच एक चान्स था कि वह चॉकलेट निकाल ले।

थोड़ी देर बाद आन्टी वापस आ गई। आयुष उनके सामने देखकर हल्का सा मुस्कुराया और अनाथाश्रम की ओर चल पड़ा। वह अपने रूम में पहुँचा ही था कि उसे रोज़ी मैडम की आवाज सुनाई दी। मैडम ने सभी बच्चों को डाइनिंग हॉल में बुलाया।

आयुष भी डाइनिंग हॉल में पहुँच गया। दुकान वाली आन्टी को अपने डाइनिंग हॉल में देखकर वह चौंक गया। 'आन्टी यहाँ क्या कर रही है?' इससे पहले कि आयुष कुछ और सोचता रोज़ी मैडम ने उनका परिचय कराया। 'बच्चों ये इला आन्टी हैं। आन्टी तुम्हें एक बहुत अच्छा वीडियो दिखाएँगी।'

'लेकिन पहले मैं आप सबको एक बढ़िया चॉकलेट दूँगी' यह कहकर इला आन्टी ने बैग में से बच्चों के लिए चॉकोबज़ चॉकलेट्स निकाली। आयुष की आँखें चौड़ी हो गई और दिल में बहुत राहत महसूस हुई। अगर आयुष ने दुकान के बाहर आन्टी के बैग से चॉकलेट निकाल ली होती

तो अभी आयुष की क्या हालत हुई होती! वह पकड़ा जाता, रोज़ी मैडम की मार पड़ती और फ्रेन्ड्स उसे 'चोर-चोर' कहकर चिढ़ाते! चोरी नहीं की तो सामने से चॉकलेट मिली और चोरी छुपे पैसे इकट्ठे किए तब...?!!

आन्टी के जाने के बाद आयुष रोज़ी मैडम के रूम में गया और उनके हाथ में पचास रुपये दिए। उसने हिम्मत करके कहा, 'सॉरी मैडम। मैंने चॉकलेट खरीदने के लिए बचे हुए पैसे अपने पास रख लिए थे।'

मैडम ने उसकी तरफ देखा। थोड़ी देर तक कुछ नहीं बोली। फिर आयुष को अपने पास बिठाकर पूछा, 'तो फिर तुम वापस क्यों दे रहे हो। मुझे तो पता भी नहीं चलता कि तुमने रख लिए हैं।'

'लेकिन मुझे तो पता था। इसलिए मुझे हमेशा पकड़े जाने का डर लगा रहता था।' आयुष ने कहा।

मैडम मुस्कुराई और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली, 'बेटा, गलत काम करने से इतना डरो कि कभी गलत काम करो ही नहीं। तो फिर कभी पकड़े जाने का डर रहेगा ही नहीं।'

यह तो नई ही बात है!

मुझे क्लास रूम में से एक अच्छी पेन्सिल मिली।

मुझे दे दो। मैं इसे स्कूल के लॉस्ट ऐन्ड फाउन्ड में दे दूँगा। जिसकी खोई होगी उसे मिल जाएगी।

प्रामाणिकता यानी इस तरह जीवन जीना कि किसी का कुछ भी अनुचित हमारे घर में न आए।

मैंने परीक्षा में चीटिंग की है। अगर मैं पकड़ा गया तो?

प्रामाणिकता होगी तो डर नहीं होगा।

डिसऑनेस्टी (अप्रामाणिकता) का पश्चाताप करो। जो व्यक्ति पश्चाताप करता है वह निश्चित रूप से ऑनेस्ट है।

मैंने बिना पूछे तुम्हारे क्रेयॉन्स ले लिए और वे टूट गए। सॉरी!

ऐतिहासिक गौरवगाथा

युद्ध लड़ने के बाद गुजरात के सेनापति विमल को बहुत पश्चाताप हुआ। एक दिन उन्होंने एक आचार्य का प्रवचन सुना। आचार्यश्री ने विमल से कहा, 'तुम आबू तीर्थ का उद्धार करो। ऐसा करने से तुम्हारे पाप नष्ट हो जाएँगे।'

इसके बाद उन्होंने अंबिका माता की आराधना की। अंबिका माता प्रसन्न हुए और उनसे वरदान माँगने को कहा। विमल मंत्री ने कहा, 'मुझे पुत्र की प्राप्ति हो और आबू तीर्थ का उद्धार करने की शक्ति मिले।' देवी ने कहा, 'तुम्हारी दो इच्छाओं में से केवल एक ही पूरी होगी। इसलिए दो में से एक माँग लो।' विमल मंत्री ने तीर्थ का उद्धार करने का वर माँगा। अंबिका माता ने 'तथास्तु' कहा।

विमल मंत्री ने आबू में एक मंदिर बनाने का निश्चय किया। उस समय आबू में ब्राह्मणों की आबादी अधिक थी। वे उस ज़मीन पर जैन मंदिर के निर्माण का विरोध कर रहे थे। इसलिए ज़मीन पाना मुश्किल हो रहा था।

उस समय लोगों की ऐसी मान्यता थी कि वर्षों पहले उसी स्थान पर जैन तीर्थ था। लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं था। एक दिन विमल मंत्री को सपना आया कि चंपा के पेड़ के नीचे गड्ढा खोदने पर प्रमाण मिल जाएगा। विमल मंत्री ने स्वप्न के अनुसार किया और वहाँ भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा निकली।

यह देखकर ब्राह्मणों का दिल थोड़ा पसीजा। वे ज़मीन देने को तैयार हो गए लेकिन बहुत ऊँची कीमत माँगी। ब्राह्मणों ने माँग की कि जितनी ज़मीन चाहिए उतनी ज़मीन पर सोने की मुहरे बिछा कर कीमत चुकाओ।

विमल मंत्री तुरंत तैयार हो गए। थैलों में भरकर सोने की मुहरें लाई गईं। ज़मीन पर बिछाने का काम शुरू हुआ। तभी विमल मंत्री को विचार आया कि 'यह तो मैं अनीति कर रहा हूँ। सोने की मुहर तो गोल है। इसलिए ज़मीन पर बिछाने पर सोने की मुहरों के बीच की थोड़ी-थोड़ी जगह खाली रह जाती है। इतनी जगह भी अनैतिक रूप से (कीमत दिए बिना) क्यों ली जाए?' उन्होंने तुरंत ही सोने की मुहरें राजकोष में वापस भेज दीं और विशेष रूप से नई चौकोर सोने की मुहरें बनवाई। उन सोने की मुहरों को बिछाकर ज़मीन खरीदी।

विमल मंत्री की कैसी अद्‌भुत नीति थी! ब्राह्मणों को भी विचार नहीं आया कि सोने की मुहरें चौकोर होनी चाहिए। लेकिन विमल मंत्री ने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि उनकी तरफ से कम कीमत न चुकाई जाए।

My Creation

फिश बाउल बनाने के लिए चित्र का प्रिन्ट आउट निकालें।

→ फिश बाउल में रंग भरें और डॉटेड लाइन के अनुसार काट लें।

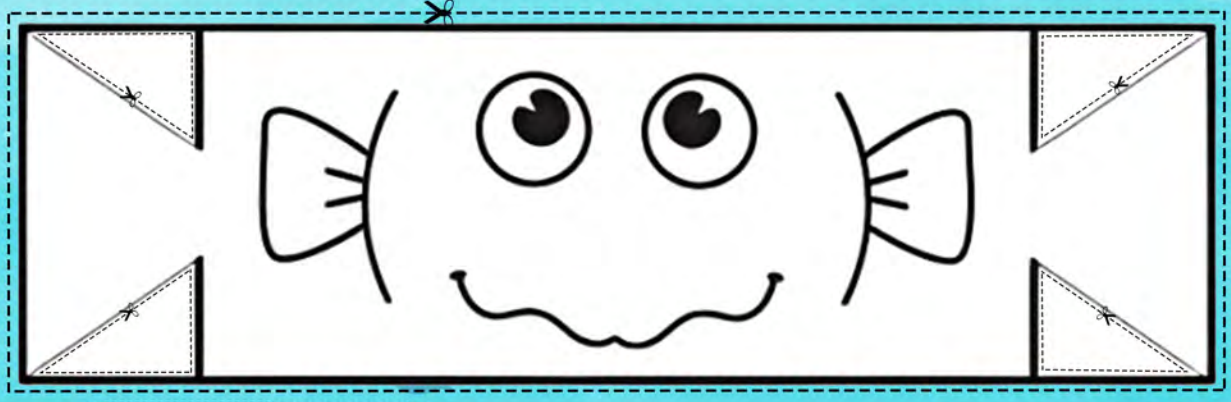

→ मछलियों में रंग भरें और डॉटेड लाइन के अनुसार काट लें।

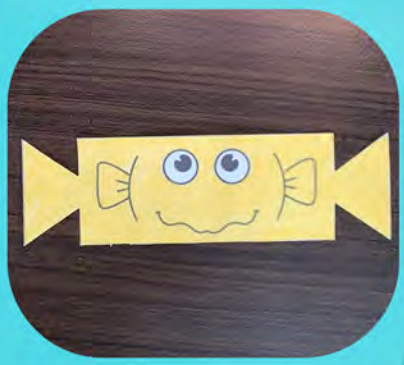

→ चित्र के अनुसार मछली को मोड़ें और उसे चिपका दें।

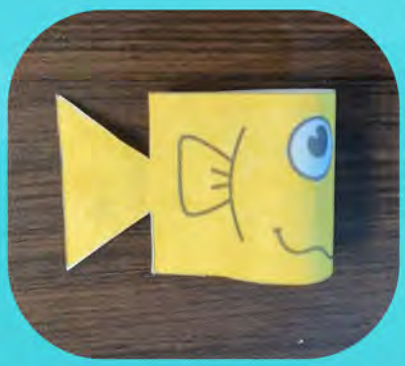

→ तैयार की गई मछलियों की फिश बाउल को अंदर चिपका दें।

AALOO CHILLY

अब तक की आलू-चिली की कहानियाँ एक साथ पढ़ने के लिए...
Click Here : https://dbf.adalaj.org/TdY6ZhXI

पूरे जंगल में चिली को ढूँढ़ने के बाद आलू हारकर घर लौटता है। फिर आलू को चिली अपने ही घर पर मिलता है। आलू के सारे लड्डू खाकर आलू के ही रूम में वह चैन से सो रहा है। अब आगे...

माँ ये क्या कह रही हैं? चिली यहाँ है!

मैं दौड़कर अंदर गया और देखा तो वह सच में मेरे बिस्तर पर ही था।

यहाँ मेरी नींद और भूख सब मर चूके थे और वह मेरे ही पलंग पर चैन से सो रहा था! लेकिन मुझे चिली मिल गया। उसे देखकर मैं इतना खुश हुआ कि मैं जाकर उसके ऊपर ज़ोर से कूदा।

'ओ मम्मी, मेरा पेट दब गया।' कहते हुए वह उठ गया और बोला, 'मुझे तुमसे बात नहीं करनी। तुम यहाँ से चले जाओ!'

मैंने उससे कहा, 'तुम मेरे घर में हो। तुम्हें मुझसे बात नहीं करनी है तो यहाँ क्या कर रहे हो?' उसने मुझसे कहा, 'मैं पार्सली का चेहरा नहीं देखना चाहता था इसलिए घर नहीं गया। और मुझे भूख लगी थी इसलिए मैं खाने आया था और खाने के बाद कब नींद आ गई यह पता ही नहीं चला!'

फिर पता नहीं क्या हुआ कि वह फिर से चुप हो गया और उसकी आँखों में आँसू आ गए। मैं उसके पास बैठ गया और उससे पूछा, 'चिली, क्या सोच रहे हो?'

तो आँखों में आँसू लिए उसने कहा, 'आलू मैं हार गया। वह भी कोको से। मैं वर्ल्ड का बेस्ट सिंगर बनना चाहता था लेकिन मैं तो जंगल का बेस्ट सिंगर भी नहीं बन पाया!'

फिर अचानक बेचैन होकर बोला, 'यह सब कोको के कारण हुआ है। उसने तुम्हारी और मेरी फ्रेन्ड्शिप तोड़ दी और इसलिए मैंने सॉन्ग बदल दिया और इसलिए मैं हार गया।'

अब वह लाल होने लगा था 'ये कोको... पता नहीं अपने आप को क्या समझता है! कुछ आता-जाता नहीं है। मुझे तो लगता है उसने जज की भी चापलूसी (बटरींग) की होगी! और तुम भी क्या कोको-कोको कर रहे थे! तुम्हारा बेस्ट फ्रेन्ड तो मैं हूँ! तो तुम कोको से ऐसा कैसे कह सकते हो कि वो ही जीतेगा!' कहते हुए उसने मुझे जोर से चोंच मारी। 'आ...ह' मैं कुछ कह पाता उससे पहले ही वह रूम में गोल-गोल चक्कर लगाने लगा और कहने लगा, 'आलू, मुझे फिर से सब गरम-गरम लग रहा है। मुझे क्या हो रहा है?! मेरे पंख जल जाएँगे। आलू, कुछ करो कि ये बंद हो जाए।'

क्या आप जानते हैं कि चिली को जो गरम-गरम लग रहा है उसे क्या कहते हैं?! और साथ में यह भी बताइए कि गरम-गरम लगना बंद हो जाए उसके लिए क्या किया जा सकता है। अपनी फोटो, नाम और शहर के साथ अपना जवाब ९३१३६६५५६२ पर भेजें। अगले अंक में पहले ५ सही जवाब देने वाले विजेता के नाम घोषित किए जाएँगे।

Hint: जवाब जानने के लिए पिछले चैप्टर पढ़ें।

Click Here : https://dbf.adalaj.org/TdY6ZhXI

चलो खेलें...

एक जैसे दिखने वाले इन चित्र में से १० अंतर ढूँढिए।

जादुई लकड़ी

बादशाह अकबर अपने दरबार में बैठे-बैठे मंत्रियों के साथ प्रजा की समस्याओं के बारे में चर्चा कर रहे थे। तभी अचानक एक व्यापारी दरबार में आया।

‘राजाजी, मेरी मदद कीजिए। मेरी जीवनभर की कमाई चोरी हो गई है।’ व्यापारी ने हाथ जोड़कर कहा, ‘मैं अपना घर पाँच नौकरों के भरोसे सौंपकर कुछ दिनों के लिए विदेश गया था। जब लौटा तो तिजोरी में रखा हुआ सारा धन गायब हो चुका था।’

‘क्या तुम्हें किसी पर शक है?’ राजा ने पूछा। ‘नौकरों का कहना है कि घर में कोई नहीं आया। तो फिर धन गया कहाँ? जरूर पाँच नौकरों में से किसी एक ने चोरी की होगी।’ व्यापारी ने कहा।

राजा ने चोर को ढूँढ़ने का काम बीरबल को सौंपा। बीरबल ने पाँचों नौकरों को दरबार में बुलाया और पूछा, 'सच-सच बताओ चोरी किसने की है? अगर तुम अभी सच बता दोगे और धन वापस लौटा दोगे तो मैं तुम्हें राजा से माफी दिलवा दूँगा।' लेकिन किसी ने कुछ कबूल नहीं किया।

बीरबल ने फिर से कहा, 'समझदार बनकर बता दो नहीं तो मूर्खता की सज़ा भारी पड़ेगी।' फिर भी सब चुप रहे। आखिरकार बीरबल ने हाथ में एक जैसी पाँच लकड़ियाँ लीं। फूँक मारकर एक-एक लकड़ी पाँचों के हाथ में दी।

उसके बाद बीरबल ने कहा, 'ये जादुई लकडियाँ हैं। चोर की लकड़ी कल सुबह तक एक हाथ लंबी हो जाएगी और चोर पकड़ा जाएगा। जिसने चोरी नहीं की है उसकी लकड़ी जैसी है वैसी ही रहेगी। अब हम कल सुबह दरबार में मिलेंगे।'

नौकरों को हैरानी हुई। ऐसी जादुई लकड़ी के बारे में कभी किसी ने नहीं सुना था। जिसने चोरी नहीं की थी वे तो आराम से सो गए।

बस एक व्यक्ति को नींद नहीं आ रही थी। उसने एक चाल चली।

उसने अपनी लकड़ी को एक हाथ के बराबर काट दिया। उसने मन ही मन सोचा 'बीरबल खुद को बहुत चालाक समझता है! लेकिन मैं उससे भी बढ़कर हूँ। कल मेरी लकड़ी एक हाथ बढ़ जाएगी। लेकिन मैंने तो आज ही एक हाथ जितनी काट दी है, इसलिए मेरी लकड़ी सबकी लकड़ी के बराबर होगी!'

अगले दिन नौकर दरबार में इकट्ठे हुए। बीरबल ने पाँचों नौकरों से लकड़ियाँ ले लीं। एक की लकड़ी बाकियों की तुलना में एक हाथ छोटी थी। बीरबल ने चोर को पकड़ लिया।

बीरबल ने चोर से कहा, 'मूर्ख, इस लकड़ी में कोई जादू-वादू नहीं है। अब राजाजी तुम्हें इतनी कड़ी सज़ा देंगे कि तुम्हें पता चल जाएगा!'

चोर को पसीना छूट गया और उसने कान पकड़ लिए कि बीरबल जैसा कोई चतुर नहीं है और अप्रामाणिकता जैसी कोई मूर्खता नहीं है।

चलो खेलें...

एक कलर दूसरे कलर को क्रोस न करे इस तरह से एक ही कलर के दो बोक्स को जोड़ें।

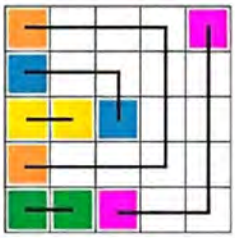

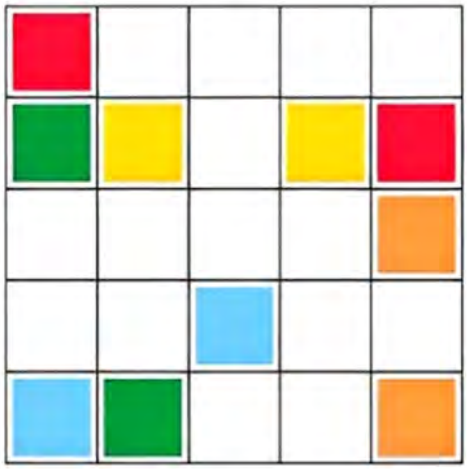

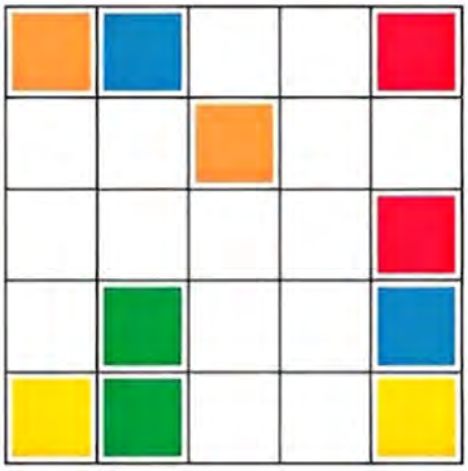

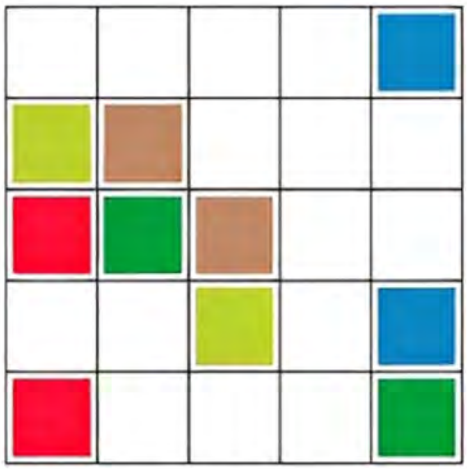

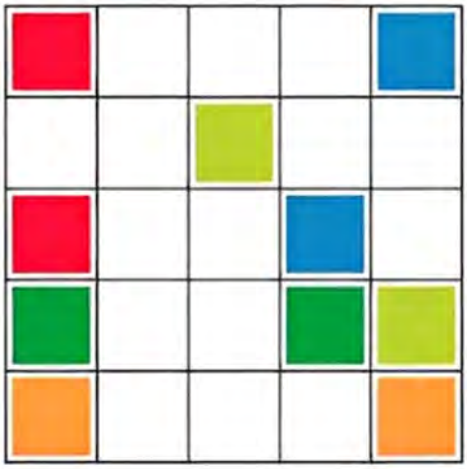

GAMES

मस्त मज़ेदार गेम्स खेलने के लिए **visit** करें...

kids.dadabhagwan.org